॥ ओ३म् ॥

प्रभु से विनय

हे प्रभु! तू कल्याण करने वाला है। आज तू हमें क्यों प्रेरित नहीं कर रहा है। हम भी तो तेरी सृष्टि में आए हैं। संसार भी तो आपका बनाया हुआ है। भगवन्! आपने इन दुराचार और इन पाप कर्मों को क्यों रचाया? आज प्रभु! इनको न रचाते तो हम संसार में पापी न बनते। प्रभु आज हम पापी हैं। हमें अपने कण्ठ से लगा। आज हमें प्रेरणा देकर उन पाप भावनाओं को समाप्त करा। प्रभु! हम ज्ञानाग्नि में इन्हें भस्म करना चाहते हैं। विधाता! हम तेरी शरण के लिए महानता चाहते हैं। प्रभु! तेरी सहायता चाहते हैं। हमें वह सहायता दे, जिससे हम ब्रह्म के समीप जाएँ, हम यज्ञशाला में जाएँ। अग्नि प्रज्वलित करें और देवताओं को हवि दें। देवता उसे पाकर प्रेरणा देंगे जिन प्रेरणाओं को पाकर, प्रभु! हम तेरी गोद में आ जाएँगे। हे कल्याणकारी प्रभु! आप कहाँ है? आज हमारे कल्याण के लिए योजना बना। हम तेरी संसार रूपी यज्ञ वेदी पर आए हैं। हमें प्रेरणा दें। हमें महान् बना। हम वास्तविक ब्रह्मा बनें, योगी बनें। हे विधाता! आज हम अपना ही कल्याण नहीं चाहते हम संसार का भी कल्याण चाहते हैं।

पूज्यपाद-गुरुदेव

अंक : 567 कुल पृष्ठ संख्या समग्र अंक : 642
वर्ष : 48 44 समग्र वर्ष : 54

अनुक्रम

क्रम संख्या	विषय	पृष्ठ संख्या
1. प्रभु से विनय	पूज्यपाद-गुरुदेव	3
2. अनुक्रम		4
3. ब्रह्मवर्चोसी	पूज्यपाद-गुरुदेव	5-20
4. माता का दायित्व	पूज्यपाद-गुरुदेव	21-38
5. ऋषियों के उद्‌गार		39
6. दान, पुस्तकों की सूची व पुस्तक प्राप्ति के स्थान तथा सूचना इत्यादि		40-42

यजुर्वेद ब्रह्म पारायण याग

परमपिता परमात्मा की असीम अनुकम्पा से पूज्यपाद-गुरुदेव ब्रह्मर्षि कृष्णदत्त जी महाराज की सद्‌प्रेरणा एवम् आशीर्वाद से वैदिक अनुसन्धान समिति द्वारा प्रति वर्ष की भाँति इस वर्ष यजुर्वेद ब्रह्म पारायण याग का आयोजन आर्य समाज मालवीय नगर नई दिल्ली के प्राङ्गण में दिनाँक 13 दिसम्बर 2019 से 15 दिसम्बर 2019 तक बड़े हर्ष एवम् उल्लास के साथ आयोजित किया जा रहा है जिसमें आप सभी अपने सम्बन्धियों, मित्रों सहित सादर आमन्त्रित हैं।

वैदिक अनुसन्धान समिति (पंजी.)

॥ ओ३म् ॥

ब्रह्मवर्चोसी

जीते रहो!

देखो मुनिवरों! आज हम तुम्हारे समक्ष पूर्व की भाँति कुछ मनोहर वेद-मन्त्रों का गुणगान गाते चले जा रहे थे। ये भी तुम्हें प्रतीत हो गया होगा, आज हमने पूर्व से जिन वेद-मन्त्रों का पठन-पाठन किया। हमारे यहाँ परम्परागतों से ही उस मनोहर वेदवाणी का प्रसारण होता रहता है जिस पवित्र वेदवाणी में उस अनन्तमयी महामना प्रभु का गुणगान गाया जाता है। क्योंकि वे परमपिता परमात्मा अनन्तमयी माने गए हैं और वे महान् हैं, पुरोहित हैं, वे पराविद्या के प्रदान करने वाले हैं। इसीलिए हम उस परमपिता परमात्मा को पुरोहित कहा करते हैं। पुरोहिताम् भूयश्चतम्। हे पुरोहित! तू महान्, हमें पराविद्या को प्रदान कर, क्योंकि पुरोहित उसे कहते हैं जो पराविद्या को प्रदान करने वाला है। नाना प्रकार की पराविद्या को देने वाला वे परमानन्द, मानो वही पुरोहित माना गया है। और पुरोहित उसे कहते हैं जो प्रत्येक मानव के हृदय में प्रेरणा देने वाला हो और उसी से प्रेरित हो करके मानव प्रेरणादायक बन जाता है। इसीलिए हम उस परमपिता परमात्मा और उसकी अनन्तता के ऊपर सदैव विचार-विनिमय करते रहें क्योंकि वह हमारा देव है, पुरोहित है और मृत्यु से पार ऊल्हांग ग्रस्तम् मानो वो मृत्यु से पार कर देता है।

वेद-मन्त्र प्रेरणा के स्रोत

मेरे प्यारे! देखो विचार आता रहता है। हमारा प्रत्येक वेद-मन्त्रः हमें एक ऐसे मार्ग के लिए प्रेरित करता है जिस मार्ग में चलने के पश्चात्, मानव के हृदय में एक आनन्द की अनुभूति होने लगती हैं। तो हमें उस परमपिता परमात्मा के आनन्दमयी स्रोतों को अपने में ग्रहण करना चाहिए। क्योंकि वे

अमम् ब्रव्हा अम्बरीवृत कहलाते हैं। इसके ऊपर मानव परम्परागतों से ही अनुसन्धान अथवा अन्वेषण करता रहा है क्योंकि वे पराविद्या के प्रदान करने वाले हैं। यज्ञोमयी स्वरूप हैं। वे इस संसार के नियन्ता, निर्माण करने वाले हैं और इस ब्रह्माण्ड में मानो इसको रचाते हैं। निर्माणम् ब्रहे कृतम् दिव्यम् ब्रहाः। मानो इसका निर्माण करते हुए इससे दूरी रहते हैं। आओ मेरे प्यारे! आज हम उस परमपिता परमात्मा की महती का जहाँ गुणगान गाते रहते हैं। क्योंकि प्रत्येक वेद-मन्त्रः हमें प्रेरित करता रहता है और प्रेरणा देता रहता है। उसी की प्रेरणा से प्रत्येक मानव प्रेरित होकर के नाना प्रकार के क्रियाकलापों में सदैव तत्पर रहता है। आओ मेरे पुत्रों! आज का वेद-मन्त्र हमें ऐसा उद्गीत गा रहा है, ऐसी विचारधारा में ले जा रहा है, जहाँ मानव देखो, अन्धकार से पार होने के लिए सदैव तत्पर रहता है। क्योंकि परमपिता परमात्मा का ये जो अनूठा जगत है, इसमें प्रत्येक मानव ज्ञान और विज्ञान की उड़ाने उड़ता रहता है और ज्ञान और विज्ञान की उड़ाने उड़ने वाला ही नाना प्रकार के लोक लोकान्तरों की आभा में परणित हो जाता है।

वसुन्धरा की विवेचना

आओ मेरे पुत्रों! मैं तुम्हें विशेषता में नहीं ले जा रहा हूँ। क्योंकि हमारा एक वेद-मन्त्र आ रहा था–वसुन्धरम् ब्रह्मणाः वसुन्धरो देवत्वाहम्। हमारे वैदिक साहित्य में एक वसुन्धरा शब्द आता है। और भी नाना प्रकार के मन्त्र हैं इस प्रकार के, परन्तु **वसुन्धरा का अभिप्राय यह है कि जिसके गर्भस्थल में हम सब वशीभूत रहते हैं अथवा उसमें बसते हैं,** उसका नाम वसुन्धरा है। क्योंकि यहाँ प्रत्येक वेद-मन्त्रः उस परमपिता परमात्मा की गाथा गा रहा है अथवा उसके गुणों का वर्णन कर रहा है। तो वह परमपिता परमात्मा एक अनन्तमयी आभा में सदैव रत्त रहता है जिससे मानव अपने में मानवीयता को अपने में धारण करता रहा है। तो मेरे पुत्रों! देखो प्रत्येक वेद-मन्त्र उस परमपिता परमात्मा की गाथा गा रहा है जिस प्रकार माता का पुत्र माता की गाथा गा रहा है।

मेरे पुत्रों! देखो, माता का निर्णय देने वाला पुत्र कहलाता है अथवा बाल्य कहलाता है। तो विचार आता है कि वह मम्म् ब्रव्हा देवत्वाम् ब्रह्मणेः कर्ताः। मेरे प्यारे! वे माता भी वसुन्धरा है। हमारे यहाँ वैदिक साहित्य में नाना प्रकार के पर्यायवाची आते रहते हैं। जैसे वसुन्धरा नाम माता को कहा गया है। वसुन्धरा नाम पृथ्वी को कहते हैं और वसुन्धरा नाम उस चैतन्यदेव का नाम भी वसुन्धरा है। तो मेरे पुत्रों! देखो, वसुन्धरा के गर्भ में क्या है। हे वसुन्धरम्! ब्रह्मा हे वसुन्धरम् ममत्वाहम्। हे वसुन्धरा! पृथ्व्याम् देवत्वाम् वसुन्धरा। मेरे प्यारे! ये वेद की आख्यायिका कहती है, क्या वे परमपिता परमात्मा जैसे वसुन्धरा है, ऐसे ही माता है। और माता जैसे माता इसी प्रकार पृथ्वी भी मानो वसुन्धरा के रूप में वर्णित है। तो विचार आता रहता है बेटा! माता के गर्भस्थल में मानो देखो हम बस रहे हैं और हम बस करके मानो उसी में रत्त हो रहे हैं। मेरे प्यारे! वे अपने में हमें बसाने वाली है। अपने में धारण कर रही है, तो इसीलिए उसका नाम वसुन्धरा कहा जाता है।

हे माता वसुन्धरा! तेरे गर्भस्थल में जब एक बिन्दु है, उस बिन्दु में शिशु है और जैसे ही शिशु माता के गर्भस्थल में प्रवेश होता है, बेटा! उसी समय सर्वत्र देवता उसकी रक्षा करने के लिए तत्पर हो जाते हैं। मेरे पुत्रों! देखो, चन्द्रमा अमृत देता है, सूर्य प्रकाश देता है और देखो ये अग्नि उष्ण बनाने लगती है। पृथ्वी गुरुत्व देती है और मुनिवरों! देखो आपो ये अपृतों में रत्त रहता है। मेरे प्यारे! देखो इसे वायु प्राण देता है और देखो अन्तरिक्ष अवकाश देता है। मेरे प्यारे! कैसा अनुपम ये प्रभु का विज्ञानमयी है। वे एक शिशु की रक्षा करने के लिए सर्वत्र देवता बेटा! अपने-अपने गुणों को लेकर के उसके उसकी रक्षा करते हैं। मेरे पुत्रों! देखो, जब सूर्य प्रकाश देता है तो उसके प्रकाश में वो रत्त रहता है और प्रकाश में ही मग्न हो करके मुनिवरों! देखो प्रकाशित होता रहता है। तो आओ मेरे प्यारे! देखो, विचार ये क्या कह रहा है। विचार कहता

है कि ममत्वाम् ब्रह्मेः। हे माता! तू अपने में हमें बसाने वाली है। हमें अपने में धारण कर रही है। तू मानो देखो धारयामी कहलाती है।

मेरे पुत्रों! जब माता के गर्भस्थल से वही शिशु मानो देखो, अपने स्वरूप को धारण करके, इस संसार में मानो गमन करता है, इस संसार में आता है, तो पृथ्वी माता की गोद में आ जाता है। वह पृथ्वी माता है जो अपने में बसा रही है, अपने में बसा लेती है। हे पृथ्वी माता! तू महान् है, तुझे वेद ने वसुन्धरा कहा है। तेरे गर्भस्थल में जब मानो हम सब प्राणी मात्र, तेरे गर्भ में वशीभूत हो जाते हैं, तू अपने में हमारा पालन करती रहती है। मेरे प्यारे! नाना प्रकार के खाद्य और खनिज पदार्थों को प्रदान करती रहती है। उस खाद्य और खनिज पदार्थों में मेरे प्यारे! उसी से मानव का जन-जीवन ऊँचा बनता है, उसी से महान् बनता है। तो मुनिवरों! विचार आता रहता है क्या ममम् ध्यानम् ब्रह्मे पृथाः। इस पृथ्वी के गर्भ में मुनिवरों! देखो क्या नहीं है। हे माता वसुन्धरा तेरे गर्भस्थल में कहीं मानो जल तपायमान हो रहा है वह ऐसा उग्रता को धारण करता है क्या वह वाहनों में क्रियाकलाप उत्पन्न कर देता है। मानो कहीं स्वर्ण के परमाणुओं का आदान-प्रदान हो रहा है, कहीं रत्नों की धातु का निर्माण हो रहा है। कहीं वैज्ञानिकजन बेटा! इसके गर्भ में प्रवेश हो करके नाना प्रकार के यन्त्रों का निर्माण करते हैं। वाह रे मेरे प्रभु! तू कैसा विज्ञानेवत्ता है। हे माता! तू कैसी वसुन्धरा है जो तेरे गर्भस्थल में मानो देखो, सर्वत्र ये वशीभूत हो रहा है।

आओ मेरे प्यारे! मैं विशेष विचार तुम्हें प्रगट नहीं करूँगा। केवल विचार ये देना है कि हम परमपिता परमात्मा की महती और अनन्तता को जानने के लिए सदैव तत्पर हो जाएँ और उसी की महती में हम सदैव रत्त हो जाएँ। तो मेरे प्यारे! देखो वह माता वसुन्धरा है और जब माता वसुन्धरा के गर्भ से ही ये मानव, मानो देखो गमन करता है तो ये परमपिता परमात्मा जो जगत नियन्ता है, निर्माण करने वाला है। जो

वसुन्धरा के रूप में वर्णित रहता है, उस **परमपिता परमात्मा का नाम वसुन्धरा है।** मेरे पुत्रों! उसी वसुन्धरा के गर्भस्थल में हम सब प्राणी वास करते हैं। उसी में मानो उसी के गर्भ में प्रवेश हो जाते हैं।

आओ मेरे पुत्रों! देखो, ममन्तवाम् ब्रह्मणे अवृताम् देवाः अनन्तवासुतम् ब्रह्मा। मेरे पुत्रों! देखो वह अनन्तवान् है और वे परमपिता परमात्मा के गर्भ में, बेटा! सर्वत्र ब्रह्माण्ड अपने में निहित हो रहा है, अपने में गतिवान हो रहा है। वही तो मुनिवरों! देखो, सर्वत्र ब्रह्माण्ड का सूत्र कहलाता है। जिस सूत्र के ऊपर बेटा! देखो, महात्मा दधीचि ने बहुत अपनी आत्मवृत्तियों को वर्णित किया है और यह कहा है कि वही तो सूत्र है, जो ब्रह्माण्ड को अपने में धारण कर रहा है। हम जैसे प्राणीमात्र को धारण कर रहा है। तो मुनिवरों! देखो, वह परमपिता परमात्मा अनन्तमयी माने गए हैं। उसकी अनन्तता के ऊपर सदैव मानव परम्परागतों से बेटा! विचार-विनिमय करता रहा है। आओ मेरे प्यारे! मैं तुम्हे, विशेष चर्चा नहीं, केवल ये, क्या देखो ये नाना वसुन्धरा का शब्द है। वेद का मन्त्र वसुन्धरा की विवेचना कर रहा है। आओ मेरे पुत्रों! देखो, आज मैं तुम्हे, वसुन्धरा के सम्बन्ध में तो विशेष चर्चा नहीं, केवल तुम्हें ये निर्णय करा रहा हूँ क्या देखो ब्रह्मणे! कृतम्। वे अपने में जो वशीभूत हो जाता है, अपने में जो दूसरों को वशीभूत कर लेता है, उसी का नाम वसुन्धरा कहा जाता है। हे वसुन्धरम् ब्रह्मा, हे वसुन्धरम्! ममत्वाम्, हे वसुन्धरम्! भूतप्रवाहा लोकाम् पृथ्वयम् ब्रव्हे कृता। मानो देखो ये सब वसुन्धरा के पर्यायवाची शब्दों में आते रहते हैं।

महात्मा दधीचि

आओ मेरे प्यारे! आज मैं तुम्हें उसी क्षेत्र में ले जाना चाहता हूँ जिस क्षेत्र में बेटा! मानव परम्परागतों से विचार विनिमय करता रहा है। हम भी करते रहे हैं। महात्मा दधीचि की चर्चाएँ बड़ी विचित्र आती रहती हैं। हमारे यहाँ वैदिक साहित्य में, बेटा! देखो दधीचि नाम भी पर्यायवाची शब्दों का

माना गया है। मेरे प्यारे! देखो, दधीचि उसे कहते हैं जो दधि यन्धनम् ब्रव्हे कर्ताः। मेरे पुत्रों! देखो, पर्वतों का नाम भी दधीचि कहा जाता है और दधीचि नाम के ऋषि भी हुए हैं और दधीचि नाम मन को भी कहा गया है। मेरे पुत्रों! देखो, दधीचि के बहुत से पर्यायवाची शब्द हैं। दधरम् जनम् ब्रव्हे दधरस्वतम् ब्रह्मा दधरम् वृथम् ब्रह्मेः कृतम् देवत्वाम् अश्वनाः। मेरे पुत्रों! जब ये वेद-मन्त्र स्मरण आते हैं तो विचार आता है कि दधीचि के बहुत से पर्यायवाची शब्द हैं।

महात्मा दधीचि द्वारा अश्विनी कुमारों को ब्रह्मविद्या की शिक्षा

मेरे प्यारे! देखो, हम प्रसङ्ग ले रहे थे ब्रह्मज्ञान का। और ब्रह्मज्ञान में ब्रह्मज्ञानी देखो, अपने शिष्य को बेटा! ब्रह्मवाद का प्रसार कर रहा है और ब्रह्म की विवेचना कर रहा है और ब्रह्मसूत्र का वर्णन कर रहा है। मेरे प्यारे! देखो, वह महात्मा दधीचि हैं। वे महर्षि दधीचि बेटा! देखो, अपने में, अपनेपन को धारण करते हुए और वे अश्वनी कुमारों को ब्रह्मविद्या प्रदान करते। बेटा! उनका ब्रह्मवाद समाप्त हो गया। उन्होंने जितना उपदेश देना था, वह उपदेश संक्षिप्त में दिया। क्योंकि उपदेश से व्याख्या नहीं होती है। उपदेशों का तो एक चरण होता है और वह एक चरणों में एक शब्द होता है उसको गीत रूप में गाया जाता है। उसकी विवेचना ये मनस्तत्त्व विचार में करता रहता है। ये प्राण के सहयोग से और मन की प्रतिभा से और विचार की धारा ले करके बेटा! इसका प्रायः वो निर्णय देता रहता है। विचारता रहता है। तो आओ मेरे पुत्रों! देखो, मैं इस सम्बन्ध में विशेष विवेचना नहीं देने आया हूँ। विचार केवल ये प्रगट हो रहा है क्या महात्मा दधीचि ने जब देखो अश्वनी कुमारों को ब्रह्म का उपदेश दे दिया और उपदेश पान करते हुए वे आश्रम में विद्यमान रहे। क्योंकि वे नाना प्रकार की विचारधारा में सदैव रत्त रहे। तो मुनिवरों! देखो, महाराजा इन्द्र को ये प्रतीत हो गया था क्या अश्वनी कुमारों को ब्रह्मविद्या का उपदेश महात्मा दधीचि ने दिया है। और उनके कण्ठ के ऊपर वाले भाग को भी यन्त्रों ने दूरी किया। परन्तु वो पुनः

ज्यों का त्यों औषधियों के बल से, वनस्पतियों के बल से वो ज्यों का त्यों स्थित कर दिया है।

महाराजा इन्द्र का महर्षि आश्रम में आगमन

मेरे प्यारे! देखो, महाराजा इन्द्र ने कहा, चलो मैं महात्मा दधीचि के द्वार पर गमन करता हूँ। मेरे पुत्रों! देखो, महाराजा इन्द्र अपने आसन को त्याग करके और वो मुनिवरों! देखो, महात्मा दधीचि के, महर्षि दधीचि के आश्रम में उनका आगमन हुआ। महात्मा दधीचि ने अपने स्थान को त्यागा और राजा का स्वागत किया। आइए भगवन्! इन्द्र देव, आइए! वह इन्द्र देव बेटा! देखो विराजमान हो गए।

महर्षि दधीचि और महाराजा इन्द्र का सम्वाद

विचार में विचाराम् भूतम! कहिए भगवन्! कैसे आगमन हुआ है? उन्होंने कहा प्रभु, मैं इसीलिए आया हूँ ऋषिवर, क्या तुमने अश्वनी कुमारों को ब्रह्म का उपदेश दिया है, ये मेरे विचार में नहीं आया है। उन्होंने कहा, तुम्हारे विचार में क्यों नहीं आया? उन्होंने कहा कि ब्रह्म का उपदेश आपको देना नहीं चाहिए था। उन्होंने कहा जो मेरे द्वारा, जिस विद्या का मैंने मन्थन किया है, अध्ययन किया है, गम्भीर मुद्रा में अपने को ले गया हूँ। मानो देखो, मैं परमपिता परमात्मा की जो मेरे अन्तर्हृदय में जो ब्रह्मज्ञान की धरोहर है अथवा उस धरोहर को मैं ज्यों का त्यों अपने में ही धारण करता रहूँ। क्या मुझे किसी को अधिकार नहीं है देने का?

राजा ने कहा कि यह तो यथार्थ है। परन्तु तुमने देखो इन ब्रह्मवाहा देखो ऐसे महान् तपस्वियों को तुमने ब्रह्मविद्या देई है, जिससे मेरे हृदय में ये आशंका है क्या देखो ये इन्द्रपुरी को अपने में विजय न कर लें। क्योंकि इन्द्रियोम् ब्रह्मा! देखो ये मेरी इन्द्रपुरी को जब विजय कर लेंगे तो मेरा क्या बनेगा? मेरे प्यारे! देखो, उस समय महात्मा दधीचि ने कहा, क्या ये, हे राजन्! जो राजा होते हैं वो मान-अपमान मे नहीं जाते हैं। जो राजा तपस्वी

होते हैं उन्हें भी तप करना चाहिए और तप में परणित रहना चाहिए। तुम ये तुच्छ वार्त्ता विचार रहे हो क्या देखो, अश्वनी कुमार, तुम्हारी देखो राजस्थली को न स्वीकार कर ले अथवा इन्द्रपुरी को न विजय कर लें। अरे! **देखो जो अपने अन्तर्हृदय की जो अपनी इन्द्रपुरी को विजय कर लेता है, वह संसार की देखो, इन्द्रपुरी पर नहीं जाता है।** तुम्हें यह प्रतीत होना चाहिए राजन्! क्या राजा, और देखो जो महान् तपस्वी होते हैं, जो परमात्मा की शरण में जाना चाहते हैं और आनन्द की आभा को प्राप्त करने लगते हैं, मोक्ष की पगडण्डी को ग्रहण कर लेते हैं। वे तुम्हारी इन्द्रपुरी से उन्हें कोई सरोकार, देखो अपने में कोई तपाः अधवनम् ब्रहे। तुम्हारे से कोई तात्पर्य नहीं उनका हुआ करता है। वे सदैव अपने में मग्न रहते हैं और प्रभु का सदैव चिन्तन करते हैं।

मेरे पुत्रों! देखो, महाराजा इन्द्र ने कहा, क्या हे भगवन्! तुम्हें यह प्रतीत है क्या मुझे राज्य सभा से, मानो मैं अपने में देवताओं का न्याय करता हूँ। उन्होंने कहा देवता, देवताओं का न्याय कोई नहीं कर पाता। देवताओं का न्याय तो ब्रह्म विद्या से किया जाता है राजन्। मानो तुम इस आशंका मे लग गए, क्या मैं मान-अपमान में चला जाऊँ। क्या राजा जो मान अपमानी होता है वो राजा, देखो अभिमानी बन कर के अपने को नष्ट कर देता है और जो राजा नम्र होता है, राजा सेवक की भाँति सेवा करता है, वह मानव देखो, वह महान् कहलाता है।

ब्रह्मवेत्ता की पराकाष्ठा

मेरे प्यारे! देखो, इन्द्र अपने में यह जान गया कि दधीचि तो ब्रह्म विद्या में तल्लीन हैं और ये ब्रह्मवेत्ता हैं। तू जितना भी प्रश्न करेगा, उतनी ज्ञान की अग्नि प्रचण्ड हो जाएगी। और तू मानो देखो, तेरी मृत्यु हो जाएगी। मेरे प्यारे! देखो, यह महाराजा इन्द्र ने अपने में स्वीकार कर लिया। इन्द्राम् भूतम् ब्रह्मे।

महाराजा इन्द्र की कामना

विचारधारा पुनः से प्रगट होने लगी। क्या हे भगवन्! मैं अपने राष्ट्र को उन्नत बनाना चाहता हूँ। मेरे प्यारे! देखो, महात्मा दधीचि ने कहा, क्या जब इन्द्र राजा बन करके मान-अपमान में राष्ट्र में देखो तपस्वियों को जीवनदान नहीं दे सकता, जीवन दे नहीं सकता तो वो कोई राजा मानो देखो राष्ट्रीयता में परणित योग्य नहीं है।

महाराजा इन्द्र का पश्चातापू

मेरे पुत्रों! देखो, जब ये वाक्य उन्होंने श्रवण किया तो वे मौन हो गए। तो विचार आता रहता है उनका दोनों का परस्पर विचार-विनिमय होता रहा। और विचारधारा में ये अन्तिम चरण रहा उनका, क्या भगवन्! देखो मैंने ये अपने में बड़ी अव्यवस्था, बड़ी तुच्छता अपने में धारण की है जो, मैंने आप जैसे ब्रह्मवत्ताओं को ब्रह्मविद्या से मैं तुम्हें वंचित करना चाहता हूँ, देने से ये मानो मेरी देखो धृष्टता है। मेरे पुत्रों! देखो, महाराजा इन्द्र अपने आसन को चले गए। गमन करते रहे।

आयुर्वेद की उड़ान

देखो, महात्मा दधीचि ने, दधीचि वह कहलाते थे! बेटा! एक ही गुरु के शिष्य थे। वे मुनिवरों! देखो जहाँ ब्रह्मविद्या में पारायण थे वहाँ आयुर्वेद में भी वो बड़े महान् कहलाते थे। क्योंकि राजा रावण के राष्ट्र सुधन्वा, देखो सुकेन वैद्यम् ब्रवहा, जो वैद्यराज थे। मानो वे दोनों आयुर्वेद के ऊपर अध्ययन करते रहते थे और उनकी अध्ययन की प्रतिक्रिया यह बन गयी, क्या उनका आयुर्वेद इतना ऊर्ध्वा में था क्या मानव के हृदय को मानो छः-छः माह तक वे औषधियों में नियुक्त करते थे। और छः माह के पश्चात् मुनिवरों! देखो औषधियों से देखो हृदय अमृताम् हृदय को ज्यों का त्यों निहित करते हुए उसमें गति आ जाती थी। वह गतिवान होता रहा है। आयुर्वेद अपने में बड़ा शाश्वत माना गया है।

मानव को प्रकाश में रहना चाहिए

बेटा! मैं तुम्हे, आयुर्वेद की चर्चा प्रगट करने नहीं आया हूँ। विचार-विनिमय केवल यह कि आज का हमारा वेद-मन्त्र क्या कह रहा है। बेटा! वेद-मन्त्र कहता है, हे मानव! इस नाना प्रकार की विद्याओं को जानकर के तू मानो देखो अपने मानवत्त्व को तू ऊँचा बना और तेरी विचारधारा पवित्रता में परणित रहे और तू परमपिता परमात्मा की महती को जानता हुआ, मानो ज्ञान और विज्ञान में रत्त होकर के तू अपने से अन्धकार को दूरी कर। क्योंकि मुनिवरों! प्रभु का जो राष्ट्र है, ये राष्ट्र बेटा! अन्धकार से रहित है। ज्यों-ज्यों तुम संसार को जानते हुए, परमपिता परमात्मा के निकटतम पहुँचने का प्रयास करोंगे, उतना ही तुम्हारा अज्ञान समाप्त होता रहेगा। उतना ही तुम्हारा जीवन प्रकाश में परणित हो जाएगा और **प्रकाश में रत्त रहना ही अन्धकार को त्यागना है**। मेरे प्यारे! प्रकाशाम् भूतम्, क्योंकि प्रभु का जो राष्ट्र है, वह ऐसा राष्ट्र है, जहाँ मुनिवरों! देखो अन्धकार नहीं होता। और जब राष्ट्र में अन्धकार नहीं होता। तो वहाँ आलस और प्रमाद भी नहीं होता। और जहाँ आलस प्रमाद नहीं होता, वहाँ मेरे प्यारे! देखो अन्धकारसस्वतम् रात्रि नहीं होती। रात्रि नहीं होती तो अन्धकार नहीं होता। अन्धकार नहीं होता तो आलस्य नहीं रहता और देखो जब आलस्य नहीं रहता तो बेटा! वहाँ मृत्यु भी नहीं हुआ करती। वहाँ सदैव प्रकाश रहता है। और प्रकाश के लिए मानव को सदैव याचनिक रहना चाहिए। याचक बन कर के ही मुनिवरों! प्रभु का ध्यानावस्थित अपने में धारयामी बना रहे। आओ मेरे पुत्रों! मैं तुम्हें विशेषता में ले जाना नहीं चाहता हूँ। मैं कोई व्याख्याता नहीं हूँ। केवल तुम्हें परिचय देने के लिए आया हूँ और वह परिचय यह है कि संसार को जानना चाहिए। जब तक संसार को नहीं जानोगे, तब तक मुनिवरों! देखो, अन्धकार तुमसे दूर ही नहीं होगा। मान-अपमान भी दूर नहीं होगा।

मेरे पुत्रों! मुझे स्मरण आता रहता है। मैं जब मानो, देखो, याग के सम्बन्ध में अपनी विवेचना में विवेचनित होता रहता हूँ। आज हमारे वेद के पठन-पाठन में जहाँ प्रकाश का वर्णन है, जहाँ मुनिवरों! देखो नाना प्रकार की वृत्तियों का वर्णन है वहाँ मुनिवरों! देखो, याग का भी प्रकरण भी आता रहता है। यजनम् यजनम् ब्रव्हा, वृतम् देवत्वाम् देवाः। यजमान अपनी यज्ञशाला में विद्यमान हो करके प्रत्येक वेद-मन्त्र को उद्गीत रूप में अपने में श्रवण करता रहता है और श्रवण करता, उसको स्वाहा कह करके उसे द्यौ में ले जाना चाहता है।

याग कैसे किया जाए

मेरे पुत्रों! देखो, मैंने तुम्हें कई काल में वर्णन करते हुए कहा था, याज्ञवल्क्य मुनि महाराज अपने में बड़े श्रोत्रिय मानो ब्रह्मवेत्ता थे और वे ब्रह्मवेत्ता मेरे प्यारे! महान् कहलाते हैं। एक समय याज्ञवल्क्य मुनि महाराज अपने विद्यालय में विद्यमान हो करके बेटा! ब्रह्मचारियों के समक्ष, ब्रह्मचारियों के मध्य में, मुनिवरों! देखो, वह उपदेश दे रहे थे। याग सम्पन्न हो गया था प्रातःकाल का। तो मुनिवरों! देखो यज्ञदत्त ब्रह्मचारी, यज्ञदत्ता, सुकेन और मुनिवरों! देखो व्रेतकेतु ये तीनो ब्रह्मचारी उपस्थित हुए। मेरे प्यारे! देखो, वह यज्ञदत्त ने कहा प्रभु! ये जो यजमान उपस्थित हुआ है, ये यज्ञ करना चाहता है इसमें मानो देखो ये याग कैसे किया जाए? हम याग की प्रक्रिया को नहीं जानते।

याग का क्रम

उन्होंने कहा याग में साकल्य होना चाहिए, घृत होना चाहिए और समिधा के द्वारा, और मानो देखो यज्ञशाला का विधिवत् निर्माण होना चाहिए। उसमें पार्थिवता मानो विशेष होनी चाहिए। जैसे नाभि में होती है मानो देखो **नाभि के आकार पर यज्ञशाला का निर्माण होता है**। जैसे माता के गर्भस्थल में जब मानो देखो, बालकाण्डम् ब्रहे माता के गर्भस्थल में होता है तो माता

की नाभि जो होती है उस नाभि से बाल्य की नाभि का समन्वय होता है और वह जो एक नाभि है, वही मानो देखो माता के शरीर का केन्द्र कहलाता है। मानव के शरीर का भी वही केन्द्र कहलाता है क्योंकि **जब संसार में हम असहाय होते हैं, परमपिता परमात्मा ही सहायक बनता है।** मेरे प्यारे! देखो कैसा निर्माण है प्रभु का। मेरे पुत्रों! देखो, माता के रसना के यदि अमृत को पान करना है, माता की रसना के निचरले विभाग में एक चन्द्रकेतु नाम की नाड़ी होती है। चन्द्रमा से वो अमृत लेती है और मानो वही चन्द्रकेतु नाम की नाड़ी का सम्बन्ध माता की पुरातत्व नाम की नाड़ी से होता है। और पुरातत्व नाम की नाड़ी का समन्वय माता की लोरियों से होता है। और लोरियों से पञ्चम् नाड़ी बन कर के चलती है। माता की नाभि का और देखो, नाभि से उन नाड़ियों का समन्वय है और बालक की नाभि का समन्वय हो जाता है, तो बेटा! वो अमृत को पान कर रहा है। चन्द्रमा अमृत दे रहा है। नस नाड़ियों के द्वारा व उसका भरण किया जा रहा है। वह मेरा प्यारा प्रभु कितना विज्ञानवेत्ता है। कितना वो विज्ञानमयी कहलाता है।

आज मैं बेटा! उसके विज्ञान की चर्चा प्रगट करना नही, केवल विचार-विनिमय यह उन्होंने कहा इसी प्रकार याज्ञवल्क्य मुनि बोले कि वह नाभि ही यज्ञशाला है। ऐसे ही मानो देखो यज्ञशाला का निर्माण अच्छी प्रकार किया जाए, स्तम्भों वाली होनी चाहिए। जैसे परमपिता परमात्मा की ये ब्रह्माण्ड, ये संसार रूपी यज्ञशाला है इसमें भी मानो देखो चौबीस खम्बे कहलाते हैं। माता के गर्भस्थल में जब मानव शरीर रूपी यज्ञशाला का निर्माण हुआ, ये भी चौबीस खम्बो वाली है। मेरे पुत्रों! याज्ञवल्क्य मुनि महाराज ने जब ब्रह्मचारियों के समक्ष इस प्रकार की विवेचना की तो देखो यज्ञदत्त ने कहा हे प्रभु! मैं यह जानना चाहता हूँ जब मानो देखो ये नाभाम् ब्रव्हे हे प्रभु! यदि अमृताम् दिव्य ब्रहे क्रतम् देवत्वाहम्।

समिधा के द्वारा याग

हे भगवन्! जब ये सुविधा न हो, जहाँ ये सुविधा न हो, अग्नि तो है,

परन्तु देखो इस प्रकार की यज्ञशाला न हो और निर्माण, देखो साकल्य न हो और वह अमृताम् व घृता वृत भी न हो तो प्रभु याग कैसे करे? उन्होंने कहा याग, देखो समिधा और अग्नि अग्न्याधान करके समिधा के द्वारा बेटा! याग करना चाहिए। प्राणाय स्वाहाः अपानाय स्वाहाः, व्यानाय स्वाहाः, नाना प्रकार की देखो इस प्रकार की आख्यायिका, वेद-मन्त्रों का उद्गीत गाते याग करना चाहिए। अग्न्याधान और देखो समिधा के द्वारा।

जल के द्वारा याग

उन्होंने कहा प्रभु! कहीं मानो देखो ये समिधा न हो तो उस समय हम कैसे याग करें? उन्होंने कहा जब यह समिधा और अग्नि भी न हो तो तुम मानो देखो जल से, जल से तुम याग कर सकते हो। देखो वह याग, देखो अमृतम् जल को ले करके प्रोक्षण करते हुए यज्ञशाला में, मानो देखो जल के द्वारा याग करो, अपने प्रोक्षण के द्वारा। मेरे प्यारे! देखो, वही यगम् ब्रव्हा वेद-मन्त्रों का उद्गीत होना चाहिए।

रज के द्वारा याग

मेरे पुत्रों! देखो, ऋषि से ब्रह्मचारियों ने कहा, प्रभु! यदि ये भी सुविधा न हो, जल भी न हो। उन्होंने कहा जल देखो, पृथ्वी की रज के द्वारा हम देखो याग कर सकते हैं। देखो, रज पवित्रस्थली में अमृताहम, मेरे प्यारे! देखो, प्राणाय स्वाहा, अपानाय स्वाहा, अबम् ब्रह्मे क्रतम स्वाहा। नाना प्रकार के वेद-मन्त्रों का उद्गीत गाते हुए याग करो।

वेद-मन्त्रों के उद्गीत द्वारा याग

उन्होंने कहा प्रभु कहीं पर्वतों में जाना हो जाए वहाँ रज भी न प्राप्त हो तो याग कैसे किया जाए? मेरे प्यारे! देखो, याज्ञवल्क्य मुनि बोले, क्या मन से तुम वेद-मन्त्रों का उद्गीत गाओ, उसी प्रकार देखो हृदय रूपी यज्ञशाला

में तुम याग करो। मानो देखो, अग्नये स्वाहा, प्राणाय स्वाहा, पाँचों प्राणों की आहुति, मानो देखो वह वेद-मन्त्रों से सुगठितता होनी चाहिए।

याग से लाभ

मेरे पुत्रों! देखो, जब ये वाक्य ऋषि ने कहा तो ब्रह्मचारी ने कहा, प्रभु हम यह जानना चाहते हैं, भगवन्! इससे लाभप्रद क्या है? उन्होंने कहा, क्या जितना भी वेद मन्त्र है जो विशुद्ध रूप से हृदय से गान गाने वाला गायक मानो देखो गान गाता है। जटा पाठ, माला पाठ, विसर्ग पाठ और अनुदात्त में वेद-मन्त्रों का जो उद्गीत गाता है मेरे प्यारे! उससे वायुमण्डल पवित्र होने लगता है। **यहाँ संसार में याग का अभिप्राय है जितना भी वायुमण्डल पवित्र होगा वह मानव के हृदय से होगा, मानव की वाणी पवित्र होने से होगा।** और जब भी ये संसार का दूषित वायुमण्डल हो जाएगा उसी काल में वाणी से ही दूषित मण्डल होगा और वाणी तो मानो देखो शान्त हो जाती है। परन्तु उस पे नाना प्रकार के आक्रमण होने प्रारम्भ हो जाते हैं।

मेरे प्यारे! मैंने तुम्हें बहुत पुरातन काल में कहा था, एक स्थली है। एक स्थली में तो वेद-मन्त्रों का उद्गीत गाया जा रहा है। प्राणायाम कर रहा है साधक, साधना कर रहा है। और एक स्थली में मेरे प्यारे! देखो मानो वह कलह, कलह का स्थल बना हुआ है। कलह हो रहा है। एक दूसरा, एक दूसरे की वाणी को स्वीकार नहीं कर रहा है। उसमें मधुरता नहीं रही है। उसमें कठोरता आ गयी है। उसमें मानो देखो कलह का वास हो गया है। अरे! वही तो मुनिवरों! देखो, नरक का वास बन करके वही तो दूषित वायुमण्डल बन जाता है।

मेरे प्यारे! वह जब ऋषि ने इस प्रकार कहा कि गार्हपत्य नाम की अग्नि का पूजन करने वाला इस प्रकार से पूजन करता है। और पूजन करता हुआ, अग्नि को अपने में धारण करता हुआ वे तेजोमयी बन जाता है। और वह वाणी के द्वारा उस उद्गीत को गाना प्रारम्भ कर देता है। मेरे प्यारे!

देखो जब ऋषि ने इस प्रकार वर्णन किया तो ब्रह्मचारीजन मौन हो गए और ब्रह्मचारियों ने कहा धन्य है प्रभु! आपने हमारे हृदय की ग्रन्थि को स्पष्टीकरण किया है। क्योंकि हम प्रायः अन्धकार में रत्त रहते हैं।

मेरे प्यारे! देखो, विचार आता रहता है हम अपने में अपनेपन को ही धारण करते चले जायें और वैदिक साहित्य में जो ज्ञान और विज्ञान है उसके ऊपर हम मुनिवरों! देखो विचार विनिमय करते चले जायें जिससे हमारी मानवीय प्रवृत्ति एक महानता में गमन करती रहे और महानता की ज्योति में ज्योतिवान हो करके अपने में ही अपनेपन की प्रतिभा को अपने में धारण करते रहें।

मेरे प्यारे! ये आज का हमारा वेद-मन्त्र क्या कह रहा है, हम परमपिता परमात्मा की आराधना करते हुए, देव की महिमा का गुणगान गाते हुए इस संसार सागर से पार हो जाएँ। आओ मेरे प्यारे! आज मैंने तुम्हें बिखरे हुए पुष्पों को एकत्रित किया है। कहीं दधीचि के आश्रम में चले गए। कहीं मानो देखो हम अपनी आभा में सदैव वेद-मन्त्रों का उद्गीत गाने लगे। कहीं मानो देखो यज्ञशाला में चले गए। यज्ञम् भूतप् प्रमाणम् ब्रहे। यह संसार एक प्रकार की यज्ञशाला है। इस यज्ञशाला में मेरे प्यारे! देखो आत्मा यजमान है और पञ्च होता देखो होता बन कर के इस संसार रूपी यज्ञशाला को मानो गति दे रहे हैं। परमपिता परमात्मा ब्रह्मा है, वह उद्गीत गा रहा है, वह सूत्र बना हुआ है और उस सूत्र में बेटा! सर्वत्र ब्रह्माण्ड पिरोया हुआ है।

यह है बेटा! आज का वाक्। **आज के वाक्य उच्चारण करने का हमारा अभिप्राय** ये कि हम परमपिता परमात्मा की महती और अनन्तता के ऊपर सदैव विचार-विनिमय करते रहें। मेरे प्यारे! ज्ञान और विज्ञान की उड़ाने उड़ते रहें। मानव देखो जब मन को इस प्रकार का विचार देता है, इस प्रकार की विचारधारा में मनस्तत्त्व चला जाता है प्राण की पुट लगाता हुआ वह मानव बेटा! संसार में विकृत नहीं होता, वह सदैव ब्रह्मवर्चोसी बन जाता

है। और वह ब्रह्मवर्चोसी बन करके ब्रह्मसूत्र में अपने को पिरो लेता है। ये है बेटा! आज का वाक्। अब मुझे समय मिलेगा, मैं तुम्हें शेष चर्चाएँ कल प्रगट कर सकूँगा। आज का वाक्य समाप्त, अब वेदों का पठन-पाठन।

ओ३म् देवाः आभ्याम् रथम् मनाः वायाहाम्।
ओ३म् ऋषि वाचन्नम गायन्तवाः आपाहाम्।
ओ३म् यौ सर्वम् भद्रा माम् रेवाहाम्।

महर्षि महानन्द मुनि जी—अच्छा भगवन्।
पूज्यपाद-गुरुदेव—आनन्द रहो।

दिनाँक : 4 जनवरी, 1990
समय : दोपहर 2 बजे
स्थान : श्री शिवकुमार त्यागी
ग्राम धनौरा, हापुड़

सदस्यता

पूज्यपाद ब्रह्मर्षि कृष्णदत्त जी महाराज की ज्ञान गङ्गा का मासिक पत्रिका ''यौगिक प्रवचन'' में, वैदिक अनुसन्धान समिति द्वारा प्रकाशन किया जाता है और जिस के आजीवन सदस्य बनने के लिए शुल्क दिनाँक 1 जनवरी 2019 से 1500 रु. और वार्षिक सदस्य बनने के लिए शुल्क 150 रु. है जिसको आप समिति के पते के साथ-साथ निम्न किसी एक पते पर भी डाक द्वारा भेजकर सदस्य बन सकते हैं—

1. डॉ. मधुसूदनेश्वर प्रकाश, प्रकाशन मन्त्री
   डी-33, पञ्चशील एन्क्लेव, नई दिल्ली-110017, फोन : 011-41030481
2. सुश्री नीरू अबरोल, कोषाध्यक्ष
   K-3, लाजपत नगर,-III, नई दिल्ली-110024 फोन : 011-41721294
3. श्री जितेन्द्र चौधरी, प्रचार मन्त्री
   ए-84, मालवीय नगर, नई दिल्ली-110017, मोबाइल : 9811707343

॥ ओ३म् ॥

माता का दायित्व

जीते रहो!

देखो मुनिवरों! आज हम तुम्हारे समक्ष पूर्व की भाँति कुछ मनोहर वेद-मन्त्रों का गुणगान गाते चले जा रहे थे। ये भी तुम्हें प्रतीत हो गया होगा, आज हमने पूर्व से जिन वेद-मन्त्रों का पठन-पाठन किया। हमारे यहाँ परम्परागतों से ही उस मनोहर वेद-वाणी का प्रसारण होता रहता है जिस पवित्र वेद-वाणी में उस परमपिता परमात्मा की महिमा का गुणगान गाया जाता है। क्योंकि वह परमपिता परमात्मा महिमावादी हैं और वे पुरोहित हैं और अनन्तमयी माने गए हैं। इसीलिए हम उस परमपिता परमात्मा की महिमा का गुणगान गाते रहते हैं और अपने में ये विचारते रहते हैं कि वह परमपिता परमात्मा कितना अनूठा है, अथवा कितना महान् है जिसका ये जगत एक महानता में दृष्टिपात आ रहा है। प्रत्येक मानव परम्परागतों से ही उस महान् देव की महिमा का गुणगान गाता रहता है जिस भी काल में ऋषि मुनि एकान्त अपनी स्थलियों पर विद्यमान रहे हैं, उसी काल में उस परमपिता परमात्मा के सम्बन्ध में, उसके ज्ञान और विज्ञान के सम्बन्ध में सदैव विचार विनिमय करते रहे हैं। क्योंकि सृष्टि के प्रारम्भ से ले करके वर्तमान के काल तक नाना विज्ञानवेत्ता हुए हैं परन्तु कोई विज्ञानवेत्ता ऐसा नहीं हुआ जो उस परमपिता परमात्मा के ज्ञान और विज्ञान को सीमाबद्ध कर सके। क्योंकि वे परमपिता परमात्मा सीमा से रहित हैं। वो सीमा में आने वाले नहीं हैं। इसीलिए मुनिवरों! देखो, वह परमपिता परमात्मा अनन्तमयी माने गए हैं। और वे पिण्ड और जगत में मानो सर्वत्रता में निहित रहने वाले हैं। एक-एक अणु और परमाणु में जो एक मानो देखो वृत्तियाँ दृष्टिपात आ रही हैं वह उस परमापिता परमात्मा की ही महती है

अथवा अनन्तता है। जिस अनन्तता के ऊपर हमारे यहाँ प्रत्येक मानव परम्परागतों से बेटा! अन्वेषण करता रहा है अथवा अनुसन्धान कर रहा है। और करता चला आया है क्योंकि वह अनन्तमयी धारा में रत्त रहना चाहता है।

मानव का मन्तव्य

प्रत्येक मानव की परम्परागतों से बेटा! एक धारणा रही है कि हम आनन्द और महानता को प्राप्त करना चाहते हैं। और जिस आनन्द के लिए प्रत्येक मानव अपने में अन्वेषण अथवा आनन्द के लिए पिपासी बना रहा है। और उसके मनों में ये मानवीयत्व निहित रहा है कि मैं आनन्द और महानता को प्राप्त करना चाहता हूँ। चाहे वह दार्शनिक रूप में विद्यमान हो, चाहे वह मानो देखो एक परमाणु को अणु में मिलान करने वाला हो, चाहे वह प्राण को अपान में उद्गीत गाने वाला हो, चाहे वह किसी भी स्थली पर विद्यमान है। वह एकान्त भयङ्कर वनों में है, कोई विद्यालयों में है, कोई मानो देखो दार्शनिकों के समाज में एकत्रित हो करके विचार-विनिमय कर रहा है। उसका मन्तव्य केवल एक ही रहा है कि मैं उस परमपिता परमात्मा के आनन्दमयी स्रोत को जानने वाला बनूँ। और अपने में श्रोत्रीय बन जाऊँ। जिससे मेरे जीवन की जो धाराएँ है अथवा अनन्तता है वह अनन्तमयी देखो अनन्तवान् से मेरा समन्वय हो जाए। जिससे मैं भी अनन्तता को दृष्टिपात करता हुआ इस सागर से पार हो जाऊँ।

बेटा! ऐसा हमारा वेद का मन्त्र कहता है। वेद का मन्त्र कहता है–''सम्भव ब्रव्हे वृतम आत्माः।'' मेरे पुत्रों! देखो आत्मा को आत्मा से समन्वय चाहता है। आत्मा को परमात्मा से समन्वय चाहता है क्योंकि वह अपने में ही तो अपने को दृष्टिपात किया जाता है। प्रत्येक मानव परम्परागतों से एक बिन्दु है और बिन्दु को बिन्दु से ही समन्वयता-

समन्वयता की आभा में रत्त रहना चाहता है। तो मेरे पुत्रों! देखो, विचार ये प्रारम्भ हो रहा है कि हम परमपिता परमात्मा की महती और अनन्तता के ऊपर सदैव विचार-विनिमय करते चले जाए। क्योंकि मानव जब भी एकान्त स्थली में विद्यमान हो करके विचारता रहा है कि वह परमपिता परमात्मा कितना अनन्त है, वह परमपिता परमात्मा क्या है? जब यह विचारता रहता है तो बेटा! उसकी बुद्धि, उसका मानवीयत्व, उसकी मेधावी, मानो देखो ऋतम्भरा बन करके वे मानो सुशील महानता की पगडण्डी को वो ग्रहण करने लगता है।

आओ मेरे पुत्रों! आज मैं तुम्हें इस विशेषता में नहीं ले जाना चाहता हूँ। केवल विचार ये कि हमारे यहाँ ज्ञान और विज्ञान परम्परागतों से ही मानवीय मस्तिष्कों में सदैव नृत करता रहा है। और विचारता रहा है कि मैं परमपिता परमात्मा की आभा में रत्त हो जाऊँ। तो आओ मेरे पुत्रों! मैं इस सम्बन्ध में विचार-विनिमय न देता हुआ, विचार ये क्या कह रहा है। ओजस्तव क्या कह रहा है इस सम्बन्ध में। बेटा! मैंने तुम्हें कई कालों में वर्णन कराते हुए कहा।

माता मदालसा का विद्यालय से प्रस्थान

आओ, मैं तुम्हें उसी क्षेत्र में ले जाना चाहता हूँ जहाँ बेटा! देखो, माता परमपिता परमात्मा की महती को जानती हुई और प्राण तथ्यों को जान करके मुनिवरों! देखो वह अपने में सदैव अपने में ही अपनेपन को दृष्टिपात करती रही है। तो मेरे पुत्रों! मैंने तुम्हें कई काल में वर्णन करते हुए कहा था कि माता के ऊपर संसार में कितना दायित्व होता है, कितना महान् देखो उसके लिए, उसकी कर्मठता के लिए, विद्यालयों के लिए, मुनिवरों! कितनी सजातीय विचारधारा उसे देनी होती है। तो मैं बेटा! उन विचारों में तुम्हें प्रायः मैं ले जाना चाह रहा था। और ये वाक्य मुनिवरों! देखो जब दीक्षान्त उपदेश महर्षि का मुनिवरों! देखो

प्रारम्भ हुआ तो मुनिवरों! देखो दीक्षान्त के पश्चात् मेरे पुत्रों! देखो राजा मनु वंश में थे उनका संस्कार हो गया। संस्कार होने के पश्चात् उन्होंने विद्यालय को त्यागते समय कहा मदालसा ने, प्रभु मेरी इच्छा तो ये नहीं थी कि मैं आपके चरणों की जो प्रतिभा है अथवा जो रज है, उसे मैं अपने से दूरी कर सकूँ। प्रभु परन्तु देखो, ब्रह्मणे यह समय अपनी-अपनी आभा में परवर्तित होता रहता है। हे प्रभु! अब मुझे आज्ञा दीजिए और मानो देखो आपके चरणों की रज मेरे मस्तिष्क में सदैव तत्पर रहे जिससे मुझे अपने कर्त्तव्य के ऊपर अभिमान न आ जाए। क्योंकि मानव का जीवन परिवर्तनशील रहता है। और वह परिवर्तनशील इसीलिए रहता है, आज नम्रता है तो कल वही अभिमान में परणित हो जाता है। और वह अभिमानी है तो वही नम्रता में सदैव निहित रहने लगता है। इसीलिए प्रभु, मेरी इच्छा सदैव यह बनी रहती है कि मैं इस मायावी जगत में न प्रवेश हो करके मेरे हृदय में निरभिमानता बनी रहे और मैं आपके चरणों का गुणगान गाती रहूँ। और आपने जो विद्या मुझे प्रदान की है मानो देखो मेरी वो विद्या सदैव एक विचित्र रूप में बनी रहे। ऐसा मुनिवरों! देखो, उन्होंने अपने में उद्गीत गाया। और ऋषि के चरणों को स्पर्श करते हुए, मेरे पुत्रों! वहाँ से उन्होंने प्रस्थान किया। और भ्रमण करते हुए मुनिवरों! देखो अयोध्या में उनका वास हो गया।

अयोध्या

मेरे पुत्रों! हमारे यहाँ मैंने तुम्हें कई काल में वर्णन कराया, क्या संसार में ब्रह्मरभे मानो देखो भगवान् मनु वंशलज ही ने इस अयोध्या का सबसे प्रथम निर्माण किया था। मानो **शम्भु मनु ने इस अयोध्या का निर्माण किया।** अष्टचक्रा नौ द्वारा मानो देखो ऐसी अयोध्या का निर्माण किया था। जैसे परमपिता परमात्मा ने माता के गर्भस्थल में इस मानव शरीर का निर्माण किया–इसमें बेटा! अष्ट चक्र हैं, नौ द्वार हैं। मेरे पुत्रों! देखो ऐसी एक अयोध्या है। यह अयोध्या है यज्ञ करने की

स्थली है। जहाँ मानव के शरीर में बेटा! देवासुर संग्राम होता रहता है। इसीलिए उसे अयोध्या कहते है। और वह किसी से विजय न हो सके ऐसी अयोध्या है। मेरे पुत्रों! देखो इसमें दोनों प्रकार का स्वरूप बन जाता है।

विचार आता रहता है कि जब मुनिवरों! देखो निर्माणवेत्ता किसी भी वस्तु का निर्माण करता है उसके निर्माण में कई प्रकार की वृत्तियाँ विद्यमान होती हैं। एक तो मानो देखो वैदिक साहित्य क्या कहता है, द्वितीय हमारे पूर्वज क्या कहते हैं, तृतीय ये होते हैं कि हमारे जो आचार्यजन हैं उन्होंने हमें कौन-सी शिक्षा दी है। तो मेरे पुत्रों! देखो इसी आधार पर मानव अपने में निर्माणित होता रहा है और निर्माण करता रहता है। तो इसीलिए प्रत्येक मानव को अपने मनोनीत हृदयों में ही निर्माण करना चाहिए। वह जो निर्माणशाला है वो बड़ी पवित्र कहलाती है। तो मेरे प्यारे! देखो, अयोध्यापुरी का जो निर्माण किया गया, वह भगवान् मनु ने, शम्भु मनु ने किया बेटा! जिसके अवृत्तों में सदैव देखो एक अभ्युदय होता रहा है।

माता मदालसा का अयोध्या में वास

आओ मेरे पुत्रों! इस सम्बन्ध में मैं विशेष विवेचना देने नहीं आया हूँ। विचार केवल ये कि माता मदालसा अपने अयोध्या में जब वास हो गया तो बेटा! देखो सर्वत्र राष्ट्र में एक मानो देखो नवीनता उत्पन्न हो गयी। और विचारों में एक मानो नवीन-नवीन विचार मानो प्रार्दुभाव होने लगे। और ये कि देखो वह गृह सम्भव ब्रव्हा, वह गृह में दिव्या का वास हुआ है। मानो देखो मनु वंश सदैव पवित्रता की आभा में सदैव गमन करता रहा है। मेरे पुत्रों! देखो जब गृह में वास करने लगे कुछ समय के पश्चात् माता मदालसा के गर्भस्थल में मेरे प्यारे! एक बिन्दु के साथ एक शिशु का प्रवेश हो गया।

माता मदालसा का पुत्रेष्टि याग

जब शिशु का प्रवेश हो गया तो माता तो तपस्वी थी। उसने ये वैदिक साहित्य में अध्ययन किया था, क्या प्रत्येक मानव को तपस्वी होना चाहिए। प्रत्येक प्राणीमात्र जब तपस्या में परणित हो जाता है। वह तपस्या ही उसके मानवीयत्व को ऊर्ध्वा में गमन करा देती है और वही मानो देखो मेधावी, ऋतम्भरा और प्रज्ञावी को जन्म देने लगती है। और वह जब जन्म दे देती है तो मानो देखो उसका जीवन एक विस्तृत बन जाता है। मेरे प्यारे! देखो मुझे स्मरण आता रहता है मैंने उनके साहित्य को भलीभाँति अध्ययन किया। माता मदालसा, बेटा! देखो वह जब तीन महा वृतम् हो गयी तो बेटा! उस समय उन्होंने संस्कार किया। और संस्कार के पश्चात् याग में ये प्रतिज्ञाबद्ध हुई, क्या मैं अब अपने बाल्य का निर्माण करना चाहती हूँ। मेरे पुत्रों! देखो, निर्माणवेत्ता वास्तव में तो परमपिता परमात्मा है। परन्तु ये विचारने लगी दिव्या कि दर्शनशास्त्र क्या कहता है। वेद का मन्त्र जो मैंने अध्ययन किया है वह क्या कह रहा है निर्माण के सम्बन्ध में तो बेटा! देखो **"निर्माणाम् ब्रव्हे क्रतम दिव्यम् ब्रहा, व्रातम् ददस्ति सुत्राः।"** वेद का वाक्य यह कह रहा है कि माता एक सूत्र बन करके बेटा! उसे विचार-विनिमय प्रारम्भ करने लगी। विचारने लगी मेरे पुत्रों! क्या इसमें कौन अमृत बना हुआ है। कौन अमृत दे रहा है। मेरे प्यारे! देखो कौन है जो प्राणसत्ता को प्रदान कर रहा है। मेरे प्यारे! माता यही विचारने लगी, क्या मेरे गर्भस्थल में जो शिशु है जिसे मुझे ब्रह्मवेत्ता बनाना है तो मानो देखो माता यह विचार रही है। कौन है, जो मानो देखो शिशु को अमृत दे रहा है। तो बेटा! प्रभु के विज्ञान में चली गयी। जब देवी प्रभु के विज्ञान में चली गयी क्या वह प्रभु कितना निर्माणवेत्ता है। कितना मानो देखो विज्ञानवेत्ता, उसके विज्ञान की कोई सीमा नहीं है।

मेरे पुत्रों! देखो, यदि विज्ञानशाला दृष्टिपात करनी है किसी भी

वैज्ञानिक को तो वह माता के गर्भस्थल के ऊपर चिन्तन करना प्रारम्भ करे। जिससे मानो देखो सर्वत्र विज्ञानशालाओं का उसे ज्ञान हो जाता है। मेरे पुत्रों! देखो, वह ''ममम् ब्रव्हा क्रतम'' जब माता मदालसा विज्ञानशाला के ऊपर विचार-विनिमय करने लगी तो बेटा! अमृत तो चन्द्रमा दे रहा है। वह चन्द्रमा अमृत दे रहा है, सूर्य प्रकाश दे रहा है। और मुनिवरों! देखो अक्रतम्! पृथ्वी गुरुत्व दे रही है और मुनिवरों! देखो आपोमयी ज्योति बन करके वास कर रहा है। वह मुनिवरों! तरलत्त्व को प्रतिपादित कर रहा है और अग्नि उष्ण बना रही है। और देखो ये वायु प्राण दे रहा है। और अन्तरिक्ष बेटा! देखो अवकाश देता है।

तीन प्रकार के परमाणु

विचार आता रहता है संसार में, जब से सृष्टि का प्रारम्भ हुआ है नाना विज्ञानवेत्ता हुए हैं परन्तु उन विज्ञानवेत्ताओं ने तीन प्रकार के परमाणुओं को अब तक जानने का प्रयास किया है। संसार में जितने भी विज्ञानवेत्ता हुए हैं, उन विज्ञानवेत्ताओं की ये मानो उड़ाने रही हैं, बड़ी विचित्र-विचित्र उड़ानें। क्या उन्होंने परमाणुओं के ऊपर विचार-विनिमय प्रारम्भ किया। **तीन प्रकार का परमाणुवाद होता है।** जो तीन प्रकार का परमाणुवाद को ही ले करके विज्ञानवेत्ता अपने में विज्ञानशाला में रत्त हो जाता है। मेरे पुत्रों! सबसे प्रथम परमाणु गुरुत्व है, तरलत्व है और तेजोमयी कहलाता है। मेरे पुत्रों! वायु उन परमाणुओं को गति देती है और अन्तरिक्ष में बेटा! वो गतिवान होते रहते हैं। तो विचार आता रहता है, जितना भी विज्ञान मानो देखो अपनी आभा में गमन कर रहा है वह तीन प्रकार के परमाणुओं में गमनमूब्रहे, कहीं बेटा! देखो विज्ञानवेत्ता देखो वह तरलतत्व को ऊर्ध्वा में गमन कराते हैं। कोई काल ऐसा आता है जो गुरुत्व को ले करके गमन करता है। कोई ऐसा काल आता है जहाँ तेजोमयी परमाणुओं को महत्त्व विशेष देता है। तो मेरे प्यारे! परन्तु ये तीन प्रकार का जो परमाणुवाद है इसी को मिलाता

रहता है। इसी को एक सूत्र में लाने का प्रयास करता रहता है। प्राण की इसमें जब वायु की पुट लगती है गतिवान होते हैं तो बेटा! यही परमाणुओं को एकत्रित करके विज्ञानवेत्ता बेटा! देखो विज्ञानशालाओं का निर्माण करते हैं। और वे अपने यन्त्रों का निर्माण करके वायुमण्डल में क्या सूर्य की किरणों के साथ गमन कराने लगते हैं। कहीं बेटा! देखो ये ''अमृताम् दिव्यम् ब्रह्मा वायुस्सुतो में गमन कराते हैं। परन्तु विज्ञानवेत्ता अपने में बड़ा विचित्र उड़ाने उड़ता रहा है।

माता की उड़ान

मेरे पुत्रों! देखो इसी प्रकार माता मदालसा अपने गर्भस्थल वाले देखो शिशु के ऊपर ऊँची उड़ाने उड़ रही है। और माता यह विचार रही है कि निर्माणवेत्ता तो वह चेतन्य देव है। मानो देखो, वही देखो देवताओं की पुरी में और देवता अपनी पुरी में शिशु को ले जा करके निर्माणित करते रहते हैं।

तो मेरे पुत्रों! देखो, ऋषि ने जब इस प्रकार वर्णन किया और ये कहा ''निर्माणम् ब्रव्हो कस्सुतम् ब्रीव्हि वृतम् देत्वा''। मेरे प्यारे! देखो माता मदालसा अपने में विचारने लगी। मेरे पुत्रों! देखो, शिशु से कहीं वार्त्ता प्रकट करती है। क्योंकि प्राण को अपान की प्रतिभा में ले जाती है और अपान को समान की प्रतिभा में ले जाती है और समान को व्यान में प्रवेश करती। मुनिवरों! देखो, उदान की पुट लगा करके उस गर्भ वाले आत्मा आत्मस्वरूप, मेरे पुत्रों! देखो आत्मस्वरूप जो शरीर में धारयामी बन रहा है शिशु बन करके उसके मानो देखो आकार को वह दृष्टिपात करने लगी।

मेरे पुत्रों! मैंने तुम्हें कई काल में कहा है विचार-विनिमय करते हुए यह विद्या हमारे यहाँ परम्परागतों से रही है। एक विद्या यह रही है, क्या माता यदि ये चाहती है कौन-से देवताओं के गुणों वाले सन्तान को

जन्म देना है उसी मानो देवताओं की उपासना करना प्रारम्भ कर देती हैं। ये विद्या बेटा! देखो द्वापर के काल तक, इस विद्या का उद्धरण होता रहा है। इस विद्या को अध्ययन करती रही हैं। मेरे पुत्रों! देखो मैं तुम्हें द्वापर के काल में नहीं ले गया हूँ। केवल मैं उस काल की चर्चा कर रहा हूँ।

मन्त्रदृष्टा

जहाँ बेटा! देखो माता मदालसा जो वेद के मर्म को जानने वाली, मानो देखो मन्त्रदृष्टा कहलाती थी। हमारे यहाँ मन्त्रदृष्टा उसे कहते हैं जो मन्त्रों के गुण उसके समीप आ जाएँ और वह उसी में मानो देखो उद्गीत गाती उसी में संलग्न हो जाए, उसी में लय हो जाए। और उसी में मुनिवरों! देखो, उद्गीत गाने लगे। जैसा मैंने पुरातन काल में कहा है क्या मुनिवरों! देखो माता मदालसा ही नहीं, मेरे पुत्रों! देखो चाक्राणी गार्गी जब भयङ्कर वनों में सामगान गाती रहती थी। क्योंकि वह भी मन्त्रदृष्टा कहलाती थी। जब वह सामगान गाती रहती तो बेटा! सिंहराज, मृगराज, सर्पराज मेरे पुत्रों! देखो एक स्थली पर उसके गान को श्रवण करने लगे। विचार आता रहता है बेटा! कितना अहिंसामयी विचार है, कितना विचारम् ब्रव्हे। मेरे पुत्रों! देखो वह मन्त्रदृष्टा कहलाते हैं जो जिस मन्त्रदृष्टा वह है जिसमें हिंसा का एक अङ्कुर भी न आ पाए।

मेरे पुत्रों! देखो, मुझे स्मरण बहुत सा काल आता रहता है, आज मैं उस काल की विवेचना में तुम्हें नहीं ले जा रहा हूँ। केवल विचार-विनिमय ये, क्या माता देखो चाक्राणी जब गान गाती रहती थी तो बेटा! देखो सर्पराज भी उस ध्वनि को अपने में ध्वनित हो रहे हैं, सिंहराज भी ध्वनित हो रहा है, मृगराज भी ध्वनित हो रहा है परन्तु देखो उसमें हिंसा का भाव नहीं आ रहा है। वाह रे मेरे प्रभु! तेरा ज्ञान और विज्ञान कितना अनन्तमयी माना गया है।

प्रभु का विज्ञान

मेरे पुत्रों! देखो माता के गर्भस्थल में जो निर्माणवेत्ता निर्माण कर रहा है, अमृत दे रहा है, तेजोमयी दे रहा है, वह कैसा मेरा देव है। कैसा विज्ञानवेत्ता है। मेरे पुत्रों! देखो, माता के गर्भस्थल में जब निर्माण करता है तो बेटा! बहत्तर करोड़ बहत्तर लाख दस हजार दो सौ दो नाड़ियों का निर्माण कर देता है। मेरे पुत्रों! देखो, निर्माण में कहीं बुद्धि का निर्माण है, बुद्धि भी एक नहीं। बुद्धि, मेधा, ऋतम्भरा और प्रज्ञावी कहलाती है। इसकी बहुत-सी शाखाएँ बन जाती है। मेरे पुत्रों! देखो मन के व्रतम बन जाते हैं। मन, बुद्धि, चित्त, अहङ्कार, ये अन्तःकरण बन जाता है।

मेरे पुत्रों! देखो, ऐसी विचित्रता है। मुनिवरों! देखो, हृदय भी दो प्रकार के माने हैं। एक लघु मस्तिष्क में हृदय है, एक मेरे प्यारे! देखो अनुष्ठान स्थली पर एक हृदय माना गया है जो मेरे पुत्रों! देखो ''हृदयम् ब्रह्माः क्रतम''। विचार आता रहता है क्या मुनिवरों! देखो वह प्रभु कितना रचियता है, कितना विज्ञानवेत्ता है। उसके विज्ञान की कोई सीमा नहीं हैं। आज मैं उस विज्ञान में नहीं जाना चाहता हूँ।

माता की शिक्षा

विचार क्या मुनिवरों! देखो, माता मदालसा, गम्भीरता से प्रभु के गुणों का इस प्रकार वर्णन करती रहती थी। मेरे पुत्रों! देखो, जब वह शिशु के अभ्युदय मुनिवरों! देखो प्रत्येक माह का आहार, माता का उसी प्रकार का उन्होंने ग्रहण किया तो बेटा! ऐसा मुझे स्मरण आ रहा है, ऐसा श्रवण किया, क्या मुनिवरों! देखो, नौ माह के पश्चात् माता के गर्भस्थल से एक बाल्य का जन्म हुआ। मेरे पुत्रों! देखो, उसे वो शिक्षा देना, लोरियों का पान कराती रहती। और तीन शब्द उद्गीत रूप में गाती, बुद्धोसी, शुद्धोसी और निरञ्जनोऽसी। ये तीन शब्द है बेटा! मेरे

प्यारे! सबसे प्रथम बुद्धोसी है। हे आत्मा!, तू बुद्धिमान है। हे आत्मा तू महान् है, तू बुद्धिमान है। मानो देखो बुद्ध है। और शुद्ध उसे कहते हैं जो शुद्ध मानो तो है, पवित्र नहीं है। तू सदैव पवित्र रहती है तू बुद्ध है, शुद्ध है और निरञ्जन है। तेरी मृत्यु भी नहीं होती। तू सदैव अखण्ड रहने वाली आत्मा है। मेरे प्यारे! देखो, माता अपने बाल्य को लोरियों का पान कराती रहती और इस प्रकार प्रसन्न हो करके वेद-मन्त्रों का उद्गीत गाती रहती। बेटा! वेद-मन्त्र अपने में उद्गीत गाता रहता शुद्धम् भव प्रव्हा लोकस्सुतम्, वस्सुतम् देवत्वाहम्।

मेरे प्यारे! जैसे परमपिता परमात्मा इस संसार का निर्माणवेत्ता है। मानो देखो वह सदैव ज्ञान और विज्ञान में रत्त रहता है। इसी प्रकार माता के गर्भस्थल में, माता का जो गर्भाशय है, वह भी ज्ञान और विज्ञान की एक कुञ्जी कहलाता है। लोरियों का जब पान कराती है तो माता प्रसन्न रहनी चाहिए। माता में ज्ञान होना चाहिए। माता जब ज्ञानी बन करके, ब्रह्मवेत्ता बन करके और ब्रह्म का बखान करती रहती है तो बेटा! देखो, बाल्य में उसी प्रकार के संस्कार उद्बुद्ध होने लगते हैं। वह संस्कारित बन जाता है और वही संस्कारित बन करके बेटा! देखो माता को ही ममता में परणित कर देता है।

मेरे प्यारे! देखो, मैंने तुम्हें उस काल, बहुत से कालों की चर्चाएँ की हैं। मेरे पुत्रों! देखो, जब माता इस प्रकार बाल्य का निर्माण करती है तो माता से प्रथम बाल्य का निधन नहीं होता। उससे ओझल नहीं हो पाता। परन्तु देखो वो ज्यों का त्यों तपस्या का एक फल है वह सदैव फल रूप में उसके समीप रहता है।

आओ मेरे पुत्रों! विचार-विनिमय क्या, माता मदालसा ने उसका मानो देखो जातकर्म और देखो नामकरण संस्कार करने के पश्चात्, मेरे प्यारे! देखो, उसे ये उद्गीत गाती रहती हे बाल्य! तू आत्मा है, तू चेतना है, तू मानो देखो अभ्युदय होने वाला है। तू ज्ञान और विज्ञान से

मानो परिपूर्ण है। अपने में मानो यह स्वीकार न करना कि मैं मानो ज्ञान और विज्ञान से ओझल हूँ। सदैव तेरा ज्ञान और विज्ञान, सदैव तेरे हृदय में सदैव प्रवेश होता रहता है। तू ज्ञान और विज्ञान की एक कुञ्जी है, एक महानता है। इस प्रकार का जो उपदेश दिया जाता है बेटा! वह एक महानता की आभा में परणित होता रहता है।

बाल्य ब्रह्मवेत्ता का माता से तपस्या गमन की आज्ञा

आओ मेरे पुत्रों! मैं तुम्हें विशेष विवेचना देने नहीं आया हूँ। मैं कोई व्याख्याता नहीं हूँ। बेटा! तुम्हें परिचय देने चला आता हूँ और वह परिचय क्या है? मुनिवरों! देखो, माता मदालसा का जो अद्भुत जीवन रहा है—वह बाल्य को बेटा! देखो, पाँच वर्ष का ब्रह्मचारी होते ही, वह ब्रह्मवेत्ता है। और ब्रह्मवेत्ता ने कहा, हे मातेश्वरी! अब मुझे आज्ञा दीजिए, मैं देखो ब्रह्मज्ञान की पुष्टि करने के लिए मैं तपस्या करने के लिए जा रहा हूँ। मेरे प्यारे! माता मदालसा बड़ी प्रसन्न हो गयी। उन्होंने कहा, ये मेरा सौभाग्य है। मेरे गर्भ से उत्पन्न होने वाला बाल्य इस संसार के मान, अपमान से रहित हो गया है, वह रहित हो गया है। देखो, मान अपमान में ये संसार में जितना भी रत्त रहेगा प्राणी, उतना वो मान अपमान की आभा में परणित हो जाएगा। और मान अपमान जितना मानव स्वीकार करता है उतने ही उसके संस्कार आवागमन के बनते रहते हैं।

मेरे पुत्रों! देखो, ऋषि ने अमृताम् देखो ऋषि दिव्या ने बाल्यम् ब्रह्मेः ये कहा कि हे बाल्य तुम्हें धन्य है। जाओ, तुम तपस्या करने चले जाओ। मेरे प्यारे! वो ही तपस्या का प्रसङ्ग आता है कि तपस्या किसे कहते हैं। मेरे पुत्रों! देखो **ब्रह्मसूत्र को जानने का नाम ही तपस्या है।** ब्रह्मसूत्र क्या है? जिसमें बेटा! ये ब्रह्माण्ड पिरोया हुआ है। यह ब्रह्माण्ड जिसमें पिरोया है वही ब्रह्मसूत्र कहलाता है। मेरे पुत्रों! एक मण्डल दूसरे मण्डल में पिरोया हुआ है। एक प्राणी, प्राणी में पिरोया हुआ है। विचार,

विचार में पिरोया हुआ है। दर्शन, दर्शन में पिरोया हुआ है। वेद-मन्त्र बेटा! वेद-मन्त्रों की झड़ियों में पिरोया रहता है।

मेरे पुत्रों! विचार आता रहता है। इस आभा को ले करके मेरे पुत्रों! माता ने कहा जाओ। बाल्य तुम तपस्या करना। तुम अपने प्राण सखा को जानने का प्रयास करो। और मन की और देखो विचारों की धारा में तुम परणित हो जाओ। और मन की गति को जानो। परन्तु देखो जिससे जो मैंने उपदेश दिया है वह तुम्हारा देखो पोष्टिक बन करके वह तुम्हारे अन्तरात्मा में परणित होता रहे। तो मेरे पुत्रों! देखो, जब दिव्या ने इस प्रकार का उसे उपदेश दिया तो वह बाल्य बड़ा प्रसन्न हुआ। और प्रसन्नचित्त हो करके मेरे पुत्रों! वो भयङ्कर वन में चला गया।

अन्य पुत्रों को शिक्षा व तपस्या के लिए गमन

जब वनों में चला गया तो मेरे पुत्रों! देखो, कुछ समय के पश्चात् माता के गर्भस्थल में द्वितीय शिशु का जब प्रवेश हो गया तो बेटा! माता उसी प्रकार उसका एक कर्म था, कर्मबद्धता थी। वेद-मन्त्रों का उद्गीत गाती रहती ''शिशुणम् ब्रह्मा क्रतम् देवत्वाम्, 'व्रतम देव ब्रह्मा देवो भवस्सुतम्'' मेरे पुत्रों! देवो, माता इस प्रकार के वेद मन्त्रों का उद्गीत गाती रहती और कहती ''चन्द्रमो सम्भव प्रमाणम् ब्रव्हे सूर्याः द्यौ लोकाम् हिरण्यम् ब्रहाः''। हे बाल्य! तुम सत्यवादी बनो। और सत्यवादी देखो उसका द्यौ में वास होता है। और जो द्यौ में वास हो जाता है वही तो मुनिवरों! देखो दिव्यत्व में परणित हो जाता है। तो मेरे पुत्रों! देखो, मैं तुम्हें विशेष विवेचना नहीं, केवल ये, क्या माता मदालसा का कितना ऊर्ध्वा में मानो विचार रहा है, दर्शनों में प्रवेश करती हुई दिव्या कहती है, हे बाल्य! तुम्हारा मानवीय दर्शन, तुम आत्मा के समीप जाने का प्रयास करो। क्योंकि **आत्मा एक ऐसी चेतना है, आत्मा ऐसा एक वृत्ति है जिसको जान करके मानो देखो तुम धन्य हो जाओगे।**

मेरे पुत्रों! देखो, आत्मा के कारण ये शरीर चेतनित बना रहता है। आत्मा के कारण ही सर्वत्र विज्ञान इसके समीप रहता है। आत्मा के कारण ही इस ब्रह्माण्ड की माला बना करके बेटा! अपने में धारण कर लेता है।

मेरे पुत्रों! विचार आता रहता है इस प्राण को सखा बना करके, मेरे पुत्रों! देखो, प्राण और अपान में प्राण को अपने में ग्रहण करने लगता है। मेरे पुत्रों! देखो, बाल्य अमृताम्, ये तीन पुत्र इस प्रकार माता के गर्भ से जब जन्म लिया तो वो तीनों ही ब्रह्मवेत्ता बन गए। और ब्रह्मवेत्ता बन करके भयङ्कर वन में चले गए। मेरे प्यारे! वो तपश्चर में प्रवेश कर गए। और तपस्या कहते ही इसे है, क्या मन प्राण और विचार को एक सूत्र में लाते हुए, इन्द्रियों के विषयों को जान करके, उनका साकल्य बना करके और जो अन्तर्हृदय में मुनिवरों! देखो यजमान याग करता है, देखो आत्म याग करता है। हृदयरूपी यज्ञशाला में जो अग्नि प्रदीप्त हो रही है, उसे अग्नि में वो स्वाहा कह करके साकल्य मेरे पुत्रों! प्रदान कर देता है। इन्द्रियों का साकल्य बेटा! रूप, रसः, गन्ध, स्पर्श और शब्दः, मेरे पुत्रों! देखो, ये अमृताम्, ये पञ्चम ब्रह्मा सुगन्धम् ब्रव्हे मुनिवरों! देखो, ये पञ्च वृत्तियों में देखो ये साकल्य बन जाता है। इसका हृदय में हृदय से हृदय में ही सिमट जाता है और वही मुनिवरों! देखो आध्यात्मिक याग करता है। जैसे भौतिक विज्ञानवेत्ता अथवा यजमान अपनी यज्ञशाला में, मेरे पुत्रों! देखो, अग्नि में अपने साकल्य को प्रदान कर देता है। और वह अग्नि उसे अपने में ग्रहण करती मानो देखो उसका विभाजन कर देती है। उसको सूक्ष्म रूप बना देती है। इसी प्रकार हृदय में ही मेरे पुत्रों! देखो शब्द के आने का ही रूप बना, जैसे रूप आता रहता है, शब्द है, गन्ध है, रस है और स्पर्श है। जब ये पञ्चीकरण का साकल्य बना करके योगेश्वर जब अपने अन्तर्हृदय में याग करता है तो बेटा! उसका विस्तृत रूप बन जाता है। और व्यष्टि

और समष्टि का एक स्वरूप बन करके मेरे पुत्रों! देखो ब्रह्मवादी बन करके अपने में रत्त हो जाता है।

आओ मेरे पुत्रों! मैं तुम्हें विशेषता में नहीं ले जा रहा हूँ। केवल विचार-विनिमय ये, देखो माता मदालसा ने तीनों पुत्रों को ब्रह्मवेत्ता बना करके, ब्रह्म का उपदेश दे करके, बेटा! वह भयङ्कर वन में चले गए।

माता मदालसा से राजा की प्रार्थना

मेरे पुत्रों! देखो, जब माता मदालसा के चतुर्थ मानो देखो शिशु गर्भ में प्रवेश हुआ तो उस समय राजा ने ये प्रार्थना की, हे देवी ये राष्ट्र कैसे चलेगा? हमारी राष्ट्रीय परम्परा रही है, क्या देखो राष्ट्रीय राजा होना चाहिए। और तुम मानो तुम्हारे से ब्रह्मवेत्ता तुम निर्माणित कर रही हो, मेरी इच्छा ये है कि एक राजा होना चाहिए। माता मदालसा ने कहा राजन्, मैंने देखो विद्यालय में तुमसे एक प्रतीज्ञा की थी आपसे। और ये कहा था कि मैं, जिस समय मेरे क्रियाकलापों का उल्लङ्घन कर दिया जाएगा उस समय मैं, मेरा वृत रूप बन जाएगा। हे देव, आप ये क्या उच्चारण करने लगे। मेरी प्रतिज्ञा भङ्ग क्यों कर रहे हैं। मेरी प्रतिज्ञा को नष्ट न कीजिए। राजा ने कहा, देवी! मेरी इच्छा तो ऐसी ही है, आगे तुम्हारी इच्छा है। मेरे पुत्रों! माता मदालसा ने कहा, तो मैं आगे गृह में प्रवेश नहीं करूँगी। मेरे पुत्रों! देखो, राजा ने वहाँ से अपने राष्ट्र को गमन किया। और माता मदालसा ने ये मानो उसे कोई विचार नहीं दिया। वह राष्ट्रीय आहार व्यवहारों में पनपता रहा। मेरे पुत्रों! गर्भ से पृथक् हो गया। तो उसको मुनिवरों! देखो, नाना सेविकाएँ मानो अपने आङ्गन में धारण करके उसे राष्ट्र की शिक्षा देते रहे।

माता मदालसा द्वारा शरीर त्याग

विचार आता रहता है मेरे पुत्रों! क्या माता मदालसा के वह ''ब्रह्मणम् ब्रहे क्रतम् देवत्वाम् लोकाम्''। मेरे पुत्रों! देखो रस्सुतम अब

जब समय ब्रहा, वह बाल्य मेरे पुत्रों! देखो बारह वर्ष का हो गया। और बारह वर्ष का हो जाने के पश्चात्, माता मदालसा अपनी स्थली पर विद्यमान हो गयी। राजा को निमंत्रित किया। राजा भी विद्यमान हो गया और एक स्थली पर पुत्र है। उन्होंने कहा राजन्, वो मेरा समय आ गया है। मैं प्रतिज्ञाबद्ध हूँ। मैंने एक सङ्कल्प किया था आचार्य कुल में कि मेरा जब बाल्य बारह वर्ष का हो जाएगा मैं अपने शरीर को त्याग दूँगी। मेरे पुत्रों! राजा बड़े दुखित हुए। राजा ने कहा, हे दिव्या! हमारा क्या बनेगा? उन्होंने कहा प्रभु! मैं नहीं जानती, आपका क्या बनेगा। मुझे तो अपनी प्रतिज्ञाओं को विचार-विनिमय करना है। मानो देखो, मेरा कर्त्तव्य पूर्ण हो गया है जिस कर्त्तव्य के लिए मैं अपने जीवन में सदैव प्रयास करती रही हूँ जिसके लिए मैंने अध्ययन किया और गृह में प्रवेश हुई, वह मेरा कर्त्तव्य पूर्ण हो गया।

मेरे प्यारे! देखो, उन्होंने बाल्य को, अपने पुत्र को एक वसीयत उन्होंने नियुक्त की। और एक मानो देखो, व्रतम्, उन्होंने कहा कि हे पुत्र! ये संसार निस्सार है। ऐसी लेखनीबद्ध करके बेटा! देखो, बाल्य के कण्ठ में निहित कर देई। और उन्होंने गायत्री छन्दों का पठन-पाठन किया। वेद-मन्त्रों का अध्ययन किया। मेरे पुत्रों! देखो, प्राणायाम् करके उन्होंने अपने शरीर को त्याग दिया। और शरीर को त्यागने के पश्चात् अब्रहे उसका दाह हो गया। परन्तु राजा बड़े दुखित हुए। राजा ने भी अपने जेठे पुत्र, उसको राज दे करके और वह मुनिवरों! देखो, वह भी भयङ्कर वन में तपस्या के लिए चले गए।

गम्भीर अध्ययन की प्रेरणा

तो मेरे प्यारे! देखो, विचार-विनिमय क्या, विचार-विनिमय ये हमारा कि हम बेटा! अपनी बहुत ऊर्ध्वा में अपनी उड़ाने उड़ते रहें जिससे हमारा मानवीय जीवन एक महानता में परणित हो जाए। और

अपने दायित्व को हम जानकारी में ला करके वैदिक साहित्य के ऊपर हमारा गम्भीरता से अध्ययन होना चाहिए। आओ मेरे पुत्रों! मैं तुम्हे विशेष चर्चा प्रगट करने नहीं आया हूँ। विचार-विनिमय केवल ये, क्या मुनिवरों! देखो, हमारे यहाँ वह जो परमपिता परमात्मा, जो सृष्टि का नियन्ता है, निर्माण करने वाला है। जो हमारे अङ्ग-सङ्ग मानो सदैव निहित रहता है। हम उसकी प्रार्थना करते हुए अपने में ज्ञान को उपार्जन करते हुए ब्रह्मवेत्ता बन करके बेटा! देखो हम ब्रह्मनिष्ठ बन करके प्रभु की उपासना करने वाले बने।

हे ममत्व! को धारण करने वाली, हे माता! तेरे ऊपर कितना दायित्व है। तू कितना मानो देखो अपने में विचारवान बन सकती है और उस विचार को दे करके तू ब्रह्मनिष्ठ बना करके देखो अपने जीवन को सार्थक बना सकती है।

ये है बेटा! आज का वाक्। आज के वाक्य उच्चारण करने का अभिप्रायः हमारा ये कि हम परमपिता परमात्मा की आराधना करते हुए, देव की महिमा का गुणगान गाते हुए, परमपिता परमात्मा की महती का वर्णन करते बेटा! इस सागर से पार हो जाएँ। ऐसा हमारा सदैव मन्तव्य रहता है। इसी विचार के साथ मुनिवरो! देखो आज का ये वाक्य अब समाप्त होने जा रहा है। आज के वाक्य उच्चारण करने का अभिप्रायः ये कि हम परमपिता परमात्मा की महती और अनन्तता को जानते हुए, ब्रह्मज्ञान में मानो आत्मतत्त्व के ऊपर गम्भीरता से मनन करने वाले बने। ये है बेटा! आज का वाक्। अब मुझे समय मिलेगा तो हम शेष चर्चाएँ कल प्रगट करेंगे।

आज के वाक्य उच्चारण करने का अभिप्रायः कि माता जो अपने पुत्र को और बाल्यों को इस प्रकार की शिक्षा प्रदान करती हैं तो बेटा! गृह स्वर्ग कहलाता है। वह गृह ब्रह्मपुरी कहलाती है, वह

गृह इन्द्रपुरी कहलाती है। ये है बेटा! आज का वाक्। वह परमपिता परमात्मा जो अनन्तमयी है, जिसका ये जगत है, जो जगत का नियन्ता है, निर्माण करता है। हम उसकी उपासना करते रहें। ये है बेटा! आज का वाक्। अब समय मिलेगा तो शेष चर्चाएँ कल प्रगट करेंगे। आज के वेद-मन्त्र ओ३म् ब्रह्मेः कृतम्–

ओ३म् देवाः माः वर्णुश्चमः रथम् आपा रहम्।
ओ३म् गायन्तवा रथम् आप्याम् लोकाः याश्चमाः रथम आपाः।।
ओ३म् यश्शचरे रथाः माम् रेवहम् आपाः।।

महर्षि महानन्द मुनि जी–अच्छा भगवन्।
पूज्यपाद-गुरुदेव–आनन्द रहो।

दिनाँक : 13 जनवरी, 1990
समय : रात्रि 8 बजे
स्थान : श्री हरिसिंह जी
महावीर एन्क्लेव
पालम, दिल्ली

नम्र-निवेदन

समिति के बैंक के खाते में दान की राशि हस्तान्तरण करने से दानदाताओं का नाम, पता व उद्देश्य इत्यादि की जानकारी बैंक से प्राप्त नहीं हो पाती इसलिए सभी दानदाताओं से नम्र-निवेदन है कि राशि बैंक के खाते में हस्तान्तरण करने के साथ-साथ समिति की वेबसाइट पर या निम्न किसी भी एक पते पर दान राशि का अन्य विवरण सहित सूचना देने का कष्ट करें–

1. डॉ. मधुसूदनेश्वर प्रकाश, प्रकाशन मन्त्री
डी-33, पञ्चशील एन्क्लेव, नई दिल्ली-110017, फोन : 011-41030481
2. सुश्री नीरू अबरोल, कोषाध्यक्ष
के-3, लाजपत नगर-III, नई दिल्ली-110024 फोन : 011-41721294

॥ ओ३म् ॥

ऋषियों के उद्‌गार

1. संसार में दूसरों के कल्याण की भावना जिनके हृदयों में रहती है, वे देवता कहलाते हैं।
2. आत्मा की व्याहृतियों को जानने वाले को देवता कहते हैं।
3. सन्ध्या के अनुकरण से मनुष्य का हृदय निर्मल और स्वच्छ बन जाता है।
4. माँ दुर्गा क्या है? माँ दुर्गा भी वह सन्ध्या है।
5. दुर्गा नाम विद्या का है।
6. मनुष्य सब कुछ देखो परमात्मा के अर्पण कर देता है, उस मनुष्य का हृदय निर्मल और स्वच्छ हो जाता है।
7. जैसे जल से तृषा शान्त हो जाती है उसी प्रकार ज्ञान से हमारे मल विक्षेप आवरण शान्त हो जाते हैं।
8. आज हमें ऐसा कार्य नहीं करना कि भोग हमें भोग लें।
9. जितने भी हम सुन्दर कार्य करते हैं वह यज्ञ कहलाते हैं।
10. हमारा जीवन परमात्मा ने रचा है वह दान, त्याग और तपस्या द्वारा यज्ञ कर्म करने के लिए रचा है।
11. निष्काम यज्ञ श्रेष्ठ होता है।
12. कर्त्तव्य को लेकर जो कार्य किया जाता है वह यज्ञ कर्म सर्वश्रेष्ठ कहलाता है।
13. मन, वचन और कर्म के द्वारा हम सुन्दर-सुन्दर यज्ञ कर्म करते चले जाएँ।
14. यज्ञ वह पदार्थ है जो मनुष्य का परमात्मा से मिलान कराता है।
15. यज्ञ करो, ऐसा सुन्दर करो, ऐसी आन्तरिक भावनाओं से करो कि तुम्हारा मिलान उस परमात्मा से हो जाए।
16. यह जो यज्ञशाला है यह त्याग की भावना देती है।
17. भौतिक यज्ञ के साथ-साथ हमें आत्मिक यज्ञ भी करना है।
18. जब हम काम, क्रोध, मद, लोभ, मोह सबकी सामग्री बना लेते हैं और ज्ञान रूपी अग्नि में भस्म कर देते हैं उस समय हमारा आत्मिक यज्ञ हो जाता है।

।। ओ३म् ।।

। कृण्वन्तो विश्वमार्यम् ।

पूज्यपाद गुरुदेव ब्रह्मर्षि कृष्णदत्त जी महाराज

राष्ट्र कल्याणार्थ षष्ठम् चतुर्वेद ब्रह्म पारायण महायज्ञ

दिनांक 22 दिसम्बर 2019 रविवार से 29 दिसम्बर 2019 रविवार तक
ग्राम खरखौदा, मेरठ यज्ञस्थली मौहल्ला तिहाई (मुण्डा महादेव मन्दिर के पास)

—: निमन्त्रण पत्र :—

प्रिय आत्मीय स्वजनों,

परमपिता परमात्मा की असीम अनुकम्पा से एवम् आदि गुरु पूज्य ब्रह्मा जी महाराज के परमप्रिय ज्येष्ठ शिष्य पूज्यपाद गुरुदेव ब्रह्मर्षि कृष्णदत्त जी महाराज (त्रेताकालीन शृङ्गी ऋषि महाराज जी) की पावमानी प्रेरणा एवम् आशीर्वाद से ''याग प्रचार समिति'' ग्राम खरखौदा के तत्वावधान में **राष्ट्र कल्याणार्थ षष्ठम् चतुर्वेद ब्रह्म पारायण महायज्ञ** वैदिक परम्परा के अनुसार आदि ऋषियों द्वारा निर्धारित कर्मकाण्ड पद्धति द्वारा सम्पन्न होगा। जिसको इस कलयुग में पुनः से पूज्यपाद गुरुदेव ने जागृत किया और अपनी ये दिव्य ज्योति अपने शिष्यों को इस विश्व में प्रकाशमान बनाए रखने के लिए प्रेरित किया। उसी मर्यादा को सम्पन्न एवम् उर्ध्वागति प्रदान करते हुए प्राणी मात्र के जीवन की जीवन सत्ता को सम्पन्न बनाने के लिए इस महायज्ञ का आयोजन मौहल्ला तिहाई ग्राम खरखौदा में आप सबके सहयोग से अत्यन्त श्रद्धा व हर्षोल्लास से पाँच वेदियों पर सम्पन्न होगा। अतः आपसे नम्र निवेदन है कि इस महायज्ञ में प्रातः व साँय समयानुसार अपने परिवार सम्बन्धी व ईष्ट मित्रों सहित उपस्थित होकर तन, मन, धन से आहुति प्रदान करते हुए अपने जीवन के मार्ग को प्रशस्त करें।

यज्ञ के ब्रह्मा – आचार्य श्री गुरुवचन शास्त्री जी, लाक्षागृह, बरनावा।

आचार्य एवम् वेदपाठी – श्री महानन्द संस्कृत महाविद्यालय लाक्षागृह, बरनावा एवम् ब्रह्मचारिणी द्रोणस्थली आर्षकन्या गुरुकुल महाविद्यालय, देहरादून।

—: कार्यक्रम :—

दिनांक 22 दिसम्बर रविवार 2019 से 29 दिसम्बर रविवार 2019 तक

प्रातः 7:15 बजे ओ३म् ध्वजारोहण (प्रथम दिवस) एवम् ब्रह्मयज्ञ (सन्ध्या)

प्रातः 8:00 बजे से **11:15 बजे** तक यज्ञ व प्रवचन

सायं: 2:15 बजे से **5:15 बजे** तक यज्ञ व प्रवचन

दिनांक 29 दिसम्बर 2019 प्रातः

प्रातः 8:00 बजे से **11:00 बजे** तक यज्ञ और महायज्ञ की पूर्णाहुति तत्पश्चात् प्रवचन एवं आशीर्वाद शान्ति पाठ व ब्रह्मभोज। **निवेदक समस्त खरखौदा निवासी**

।। ओ३म् ।।

जन्मदिन की शुभकामनाएँ

मास्टर आदित्य

श्रीमति विनेश त्यागी धर्मपत्नी श्री श्रीपाल त्यागी जी निवासी संजयनगर, गाजियाबाद, उत्तर प्रदेश ने चिरन्जीव सुपौत्र प्रिय आदित्य त्यागी सुपुत्र श्रीमति ज्योति त्यागी व मनीष त्यागी के सातवें जन्मदिवस के शुभ अवसर पर 1100 रु. का सात्त्विक सहयोग प्रकाशन कार्य के लिए बड़ी उदारता व नम्र भाव से पूज्यपाद-गुरुदेव के श्री चरण कमलों में अर्पित किया है। जिसके लिए समिति हृदय से आभार प्रगट करती है।

श्री त्यागी जी के पिताजी भी पूज्यपाद-गुरुदेव जी के अनन्य भक्त थे और उन्हीं की शिक्षा को अपने जीवन में अपनाते हुए श्री त्यागी जी प्रकाशन के कार्य के लिए समय-समय पर अनुदान प्रदान करते रहते हैं और गाँधीधाम समिति लाक्षागृह, बरनावा में भी निरन्तर यागों के शुभ अवसर पर अपनी आहुति देने में अग्रगणीय रहते हैं। अपने परिवार में भी प्रति वर्ष यज्ञ कराते हुए अपने परिवार के जीवन को वैदिक परम्परा से सम्पन्न बनाते हुए अपने सम्बन्धी मित्रों को भी निरन्तर प्रेरित करते रहते हैं। याग की ज्योति को प्रज्ज्वलित रखने में गाजियाबाद नगर में भी सामूहिक यज्ञ का आयोजन अपने मित्रों एवम् सम्बन्धियों के सहयोग से प्रति वर्ष कराने में अग्रगणीय रहते हैं।

ऐसे वैदिक परम्परा से सम्पन्न परिवार को धन्यवाद प्रगट करते हुए समिति उनके सुपौत्र के जन्मदिवस के शुभ अवसर पर बारम्बार शुभकामनाएँ प्रगट करती है। और परमपिता परमात्मा से समस्त परिवार की सुख शान्ति, दीर्घायु एवम् सर्वतोन्मुखी उन्नति की परमपिता परमात्मा से प्रार्थना करती हैं।

वैदिक अनुसन्धान समिति (पञ्जी.)

।। ओ३म् ।।

स्मृति

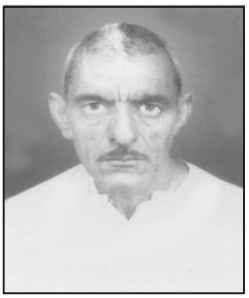

स्व. श्री जगदीश त्यागी

श्री राजकिशोर त्यागी जी निवासी ग्राम मकनपुर, जिला गाजियाबाद, उ.प्र. ने प्रकाशन कार्य के लिए 1100/- रु. का सात्विक सहयोग अपने बड़े भाई स्व. श्री जगदीश त्यागी जी की स्मृति में समिति के कार्य को प्रोत्साहित करने के लिए उनके 82वें जन्मदिवस के उपलक्ष्य में अर्पित किया है। जिससे अपने पितरों को श्रद्धापूर्वक नमः करते हुए समाज को वैदिक ज्ञान से सम्पन्न करने में अपनी सात्विक आहुति को प्रदान किया है। यह परिवार पूज्यपाद गुरुदेव के सान्निध्य में आने के पश्चात् निरन्तर उनके प्रवचनों व क्रियाकलाप से प्रभावित होता चला गया और अपने जीवन को याग से जोड़ते हुए दैनिक याग में संलग्न हो गया। इसके साथ-साथ अपने गृह पर समय-समय पर वेद पारायण यज्ञों का आयोजन आयोजित करते हुए अपने सम्बन्धियों व मित्रों को भी उससे निरन्तर ज्ञान व आनन्द की से प्रेरित कर रहा है और उनके साहित्य का अध्ययन करते हुए अपने जीवन को याज्ञिक बनाने में संलग्न हो गया। समय-समय पर इस परिवार ने तन-मन-धन से किसी न किसी रूप में अपना सहयोग गाँधी धाम समिति व वैदिक अनुसन्धान समिति के कार्यों में निरन्तर प्रदान किया है जिसके लिए समिति हृदय से आभार प्रकट करती है और परमपिता परमात्मा से परिवार के सभी सदस्यों के लिए सुख, समृद्धि व शान्ति के लिए प्रार्थना करती है।

वैदिक अनुसन्धान समिति (पञ्जी.)

योगमुद्रा में प्रवचन करते हुए पूज्यपाद गुरुदेव ब्रह्मर्षि कृष्णदत्त जी महाराज

उद्‌बोधन

वसुन्धरा के नाना पर्यायवाची हैं, जैसे वसुन्धरा पृथ्वी को कहते हैं जो नाना प्रकार का खाद्य और खनिज पदार्थों को प्रदान करने वाली है, वह वसुन्धरा, जिसके गर्भ में हम नाना प्रकार की वनस्पतियों के द्वारा पनपते रहते हैं। तो इसीलिए हम उस माता को वसुन्धरा कहा करते हैं। जब हम यह विचारने लगते हैं कि मानव जीवन से उसका घनिष्ठ सम्बन्ध है, तो हमारा हृदय विशालता को प्राप्त होने लगता है, जब हम अपने मन में यह अनुभव करते हैं, अपने हृदय में स्वयँ यह अनुभव करते हैं कि वह तो वास्तव में महामना है, वह माता महामना है। हमारा कल्याण करने वाली है।

पूज्यपाद-गुरुदेव

वर्ष 48 : अंक : 567
दिसम्बर 2019

मूल्यः
पन्द्रह रुपये

RNI No. 23889/72
Delhi Postal R. No. DL (S)-01/3220/2018-2020
Licence to Post without prepayment
U (SE)-70/2018-2020
POSTED AT N.D.PS.O ON 10/11-12-2019
Published on 5th day of the same month